

संनमाः ४ श्रीयमनिर्वाययः ४॥ ॐ ॥ यमहलवि
॥ यमहलवि ॥ कृष्णगुखात्रदाहरीतासां स्यगुह
जंगमहविता ॥ खनुगुताहलभोलविलाजिग
सत्यजावनमाकुश ॥ नहदमागा ॥ ॐ ॥ यममदव
नयभूपतिर्यकननः यकभदसवत्राचना ॥ यं

नमायत्रमाकुवितां यद्विमवननिर्वायला ॥ ॐ ॥
यमहलविता ॥ यमहलविता ॥ ॥ सर्वदवनन्दनभूरागा
नवंदनविश्वमयकनगा ॥ जानदयंकेशिभगवतः
कि ॥ ऊतामकगसरिता १ दिनकत्रजंऊचनुनयन
विदसनाथमहभूना १ हकिमगुनिववदांकदवा
य

नमामि च त्रयमस्य ॥ त्रिविंशति गीति वासमर्चिंदवना
 थनि गीति न कूचवना १ हकि ममु ॥ गिवयदायद^क
 वा नमामि नमामि च त्रयमस्य ॥ **गायमाथ ॥** साकयगव
 भूमिः नमामि हगगकनः ॥ गीति वासमर्चिंदवना १ उदय
 सलज्ज अरुं इवमात्रगतिः दविचवतमात्रकस्य १

ध्यानस्तनमनषगदवसनजनः ॥ आगङ्गु गिमनहालासा
 श्वत्रनवंदनः ॥ मर्चिकताथवतः ॥ हनसिनिवासमल्लवा
 स्य ॥ **॥ यनहैववयुवसा ॥ गगहैववि ॥ गात्रचउ ॥**

कालिंश्वत्रवद्विकत्रवदनाः ॥ आनंदमन्त्रिः ॥ हैववत्र
 पना १ वअसधिकत्रगिलिः ॥ गिलिवन्दना १ यत्रमकवि

ना कट्टर
 हे पावो

अति रस
 ता

पीठ ६४ ॥ समशाननाथ ॥ रोडभर्यकट ॥ परमानन्द

बलिदं विज्ञावना १ ॐ ग्यत्रिहं ॐ नवनि ग्यकत्रका ॥ श्री
निवासमलः नि ग्यविना ॥ **दाल ॥ यमाल ॥** नागजातवन
वाद्यकालावसनाः गिभूत उमयवर्गयासायामना १ ॐ गग
आनंद गिदगान्यवंधाः गूत्रगनदविः विचिक्त गूगंधर
मर्दिदकसिनिवासमलहनका १ ॐ नृत्तकविमनदस्य

१ २ सिंधिनिदहिनः व्योधिनिवासः पवित्रतसगरस्थ
दिगस्थित सध्व ॥

कत्रका ॥ **यनगहस्ययमा ॥ नागमल्लावलि ॥ दाल**

१ ॥ चंद्रमिलं चंद्रगंगानयी १ गंगानगधं नानकः नि
चंद्रमस्य १ सिद्धिविनां नक सिद्धि जंतां गोकुलं खंदव
विद्यदंतां १ नोके गंगधर्मे वधानं मूत्रदंतां ॥ ॐ ॥

यनयेमा ॥ दाल ॥ कलिकत्रक कल्लिगमगनाः विद्यविः

नायकलियगजवक श्वंधागसिनिवासमच्छिदकहकः
शिदिककात्रनैधवगजवक ॥ ॐ ॥ धनकुमात्रयया
॥ गगगंभान्नवि ॥ दवगद्यमध्यायगंधनकुमात्रः का
चनार्मदेयमालिहिकछकमन् २ श्रीनिवासमल्लहन
कुमालवदनाः नित्य २ ध्यानमंदिं डसूत्रना ॥ ॐ ॥ येमा
नम

॥ गगगंभान्नवि ॥ विप्रविक्रमविप्रविमृष्टिषदानाः सरुधः
वकाद्ययकसात्रवदन २ कोक्कग्नमात्रियामनहदला
यः लाकनाभ्यावन्नमः पृथ्वीनिवास ॥ ॐ ॥ धनकुमा
यनिमाहमृष्टिययस ॥ गग ॥ गगगंभान्नवि ॥ व
क्रयनिमाहमृष्टिययस ॥ गग ॥ गगगंभान्नवि ॥ व

यह प्रकाश्य प्रज्ञा मन विषय वाहन ऊगताः बुद्धि सकि सकि
ः प्रद ऊगता ॥ शिद सताथ ऊगत मय यह प्रकाश्य निवा
समल्ल क गि क र न ताः ॐ श्रि सकि निवा क र ता ॥ **ये सा**
वः दा प्र ऊ मि ॥ ऊथा द व स न र ॐ प्र व वा ऊः तथा ग स न
द वि दु वि भा ऊः द व लि य ग ध म न रा वं रा ऊ र द द वी ॥ ॐ

श्रि सा गि का स किः व ल द व म कि च व न रं र कि ॥ श्रि नि
वा स म ल ॐ य दं उ कि ॥ ॥ **थ न क मा वि वि वि**
य व स ॥ प्रा ग मा व को मि दा व वा उ इ ऊ मा न ॥ क र म क मा
नि म य व वा द नः ग न उ वा ऊ स कि ज्ञ न द श्र य वा क मा ध
व ध व गी ज्ञ न मा न्यः आ वि ग आ गी वि वि क र्म य व क र्म न्या ॥

ॐ ॥ यसात्र ॥ दानजगि ॥ समस्तसादानागमनगमनाशका
मात्रिविषुविजूनदयन्त्रः स्वर्णमणिगुणचक्रधरनाशद
विष्णुप्रतिमाकासकिः वल्लभमकिचरनकराकिः श्रीनि
वासमल्लयदंडकिः ॥ ॥ यत्रवात्रादिषु न्यायनि

यद्यस्य॥ वागकक्षाया॥ दानवतकंकाया॥ घनधात्रसक्तिः
 सक्तिरहिनाः महिषवाहदैवेषावन॥ मन्त्रयनागात्रकसक
 सः मूढरूपनखैर्बुधमहस्रणीनिवासमलमिगहननाः
 अत्रिसक्तिनृत्तकवका॥ ॐ ॥ यसावदयवगात्रकनि॥
 यिगत्रकसधनदलसनाः ॐ दायनि ॐ उतमकचननसं

हजा॥आनंददहिस्यविमगिरुवननाथश्चन्द्रायनिउत्तमः
नचननस्कहाकिः॥ददविष्णुमयिमाशिकासकिः॥वत्तद
यमाकिचननस्कहाकिः॥आनिवासमल्लकक्षयदउकि॥

॥ धनचामुखाः मन्त्रालक्ष्मीयुव्यसः ॥ नागः ॥ धनः ॥ भयवेः
आनवक्षिमितवदनाः यः। नीसंकाटिद्वयपनवचना ॥ चाम

धाममण्डपदयध्वनाः महात्मि रवतधुवननाश्रीमि
 वासमलगितरनकाः ॐ श्रिमि सकि नि न्यकनका ॥ येसाय
 याय ॥ महात्मि गदसमसाः निममयवदनदसकलाया ॥ या
 मधुनसिध्वयवामन्डा १ ददवि ॐ श्रिमि मागिकासकिः
 वलदंमकि वननसं रकिः सिनिवासमलक ॐ यदउकि

॥ धनगुणगुणयुक्तायागधनाया ॥ तावदुक्ता ॥ वंधूदगगुण
हंजायिथगमनाः अंवलितनाममायाः प्रानसैना २ गुनदकुड
मासावः दधिलिगा ४ दयसिंदनामदासप्रानसदिगा २ मर्कि
दकश्रानिवासल्लहनाः येविसंगनसर्वइय करीगा ॥ धन
रुगुमातामाकायः धजे २ वल्लुमिखकाय धूनकाडा ॥ मे

॥ लोकना^धदुगनयागअन्या ॥ यागमात्तनागक ॥ तावकुमिगा
वायसुकिनंनवतवदिगवचना ४ वसुसंकलदविचवना
२ संसाजश्रवययनाकमनका ॥ लोकनाथवल्लुकायात्रि
ता २ नभासुदवासुनसमसा ४ विचंविगश्रानिवासरुयदंर
निगाः लोकनाथववल्लुका निधिसरुका ॥ ॥ धनमेला

कनाथवलसनयाया॥ मच्छिंदक शिनिवासमलहननाः॥
कनाथवललाकनिधिसंरुका॥ लिहान्य॥ धनदानः॥ मानायि
भसुसियाअन्या॥ दनमिन्नकव्यकअन्या॥ माताशुक्क
सुधिअन्यानि॥ ॥ दानकृति॥ नानायिथशिवायसुधि
यंकननाः॥ अनामवलिनदविधिथजयना॥ गमनगमकभू

कननाः॥ मच्छिंदकशीनिवासमलहननाः॥ वेप्रिसंगधसर्वइव
कनना॥ धनमाणाहन्यदन्या॥ नागः॥ नायनुकनात्रि॥ वंधूदग
नामत्यप्रधानवचनहाः॥ धनजनजउहनविश्रुविधनः॥ भा
प्रधानविनाजिगस्यना॥ धनपुस्त्यामियावलिननिधन
न्या॥ ८६० ॥ रनिगशीनिवासमलहननान्धयोत्रजकलि

मियाविअ अविधनः संजुशी मर्चिंदक सत्रना ॥ यत्र मा वा रु
 त्रिहता ॥ धन गह ^{सु} युयक ॥ दविगन ^{धे} द्या क धून का अत्रिग
 कय ॥ यत्र दिगय जायाया ॥ तत्र व र मिधि नि द्या धिनिः का
 लिवा वा द्या यिका यः यय सी ख का अ कि दा यः यय र्व कय क
 रागः गीधन तत्र वि गना वरु व मय निउ न मा ह भ वि वा

ल २ मा १
 लका मानिने वरु विष्णु विर व न वादि मा व म ण्नी अयनि २
 ल मिश्रा वा म डा ण् भा म मा द्या मि २ गन य गु स हि मा अः
 रु मा यिका स हि मा २ गी सं का नि द व द वि स हि मा २ म ग
 व शानि वा स म ल त न कः अत्र व व स म रूः न या व र ग ना ॥
 ॥ यमी धून का अ यत्र या गु जा क ॥ तत्र व मिं धि नि नि म

॥ सकस्यामधूनकाऽऽः कालिच्छक्रलियालाकः धनरत्नं
दीक ॥ ॥ मधूमधूमयागुः मधुदायविः शुवर्धूयागु प
वर्ध्वाभ्रवहर्विवः गङ्गाः आदां ॥ कक्र २ सकसीनामकाय
मात्र ॥ ॥ भूतिधूनकाऽऽयिं तिनकायमात्रः क्रगिर
भङ्गागुथायसंतय ॥ धनदअलायिकाय ॥ वनउमि ॥

विक्रननठाअस्यसिथिंठमइलाविवकनस्याययागि
कवानस्यः नाजामनुयाकजिनतयकलआसाः लाकना
थावायनभ्रवसिनिवृत्त ॥ धनहासाद्राकधूनकाऽऽ ॥ येम
वा ॥ कृत्यावचठठादराधानअन्यः तिनउठमिनि
यनिकाथासत्राड ॥ हीकिजाहीददाअनयानलासं लाकन

थावाप^न धात्रा निवास ॥ ८६ ॥ धनगुहा रुयिकाया ॥
गुहा रुयिकाया ॥ गुहा रुयिकाया ॥ दागि यिकाया ॥
॥ च्वाकिं रवा जगि धिः स्या गा स्या या लाः न स न दाय का
अहं गयाना क्का ॥ ^{दक} यत्तान ॥ धन दागि निन दक ॥ यत्त रवा ल
य गा वाः कन द्वा द ग क जि ग मन स न्य म गः गयं इ का मा

क्का ॥ धन दागि वि स्या व नि ॥ धन गुहा रुया रुय सि धय कः
गुहा रुय ॥ धनः द अ ग न स क ल्य धन्यः द अ य ऊ धा म धु
ल थिल्यः य क य दाय य ऊ ॥ ॥ ग गा सं का गि १ द व द
आ वा धिया १ जा कि धि उ ला यि नीः स र्व म ला यो १ द व दान व
ग न स र्व म ला यो ॥ ॥ धन गुहा रुयः वा सि का या

या॥ गुहाह यिलिगकाया॥ दलात्रिकाया॥ ५०॥

वक्रवृद्धवीष्वीः का मात्रिसहिताः वात्राहिः कात्रिका महा
लक्ष्मी संशुकाः समस्त विप्रकृदिनचवनः रत्रवेकात्रिका
महालक्ष्मी संशुकाः ददवी ष्वी विमात्रका सहिताः वत्रदव
भाकचवन कंरुकिः श्रीनिवास्तमस्त कष्यदंड कि संशुका

श॥ ॥ ष्वी निगनव्याख्यायाः सम्याक॥ लिखितकय
वादात्रयावजावाय श्रीसिद्धविलंबाया यअन थमनंवा
या इवः थयक सुनानेनाहयासा यके महापा यना कश
त्र॥ ॥ गुहा॥

दीगवलिधूनेन पुनवलि विधि

ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ धनः पुनवलि विधि ॥ ज्ञायां
 पागसनं वायः रुं १ तुयु जाकि जाधूयः पुनया मूर्ति स्थापय ॥
 रुथमिषा कृयः कउ मूतु कृयः संन्या म्म कृयः न लानं व्याथ
 कृयः म्वागनं स कृयः ग्व १ वं ऊ वाथ स इथ नः म्वागनं क्रस
 लायः क १ लाकू कापगनं नयकः ऊ ऊ ना लाग सहिः ष

ऊ ना लाग सः ॥ ऊ ऊ तुगिसः इ इ ॥ ष ऊ तुगिसः लं षः
 थया लि ऊ था पं या य ॥ ॥ मधुपन ॥ सग ध्म ॥ ग हा सः
 महां का नः मरः काग वः ॥ ऊ था वलिः दिगु वलि ॥ स रू थ वि
 थाप ना या यः ॥ ॥ ज्ञायां सूर्या धः गुत्र या का र्वः पूजा रू ल
 संक य या क ॥ गुत्र म ह न नः काय रू पूजा ॥ न ह स मं तु ल द

दुर्गा की पूजा
बहुना हो योग लपूजा

नमः॥ समाधि दन॥ ॥ सगंधः गहसमहावनः मरु-
कायाः काथावलिः सूर्यपूजा॥ ॥ थयालिङ्गः दगाका
धपूजा॥ ॥ जायः धूपः आः पाः रः स्वानवाय॥ उं ज्ञान
कायसाहा॥ उं प्रह्लादकायसाहा॥ उं पद्मां नकायसाहा॥ उं
विद्यानकायसाहा॥ उं अवनविनायसाहा॥ उं नर्दिनाजा

यसाहा॥ उं निनदं नकायसाहा॥ उं महावनायसाहा॥ उं उष्टि
षवकायसाहा॥ उं सूरनाजायसाहा॥ ॥ पूजासाहाः
उत्त॥ उं दगाकाधमहाविनः स्वस्तिद्वयवधिगां॥ सर्ववि-
घ्नहन्विनं दुर्गाकाधः नमोस्तुते॥ ॥ सः धः मः उं धर्मा-
वलिद्विप॥ उं शं हं हं उष्टिषः सूरनिगुहः ज्ञानकः प्र

वसिष्ठाय॥

ह्यंगदः पद्मगदः विष्णुगदः अचरः गर्किना जन्मि न दंतुः म
 हावपः सपतिवा न ह्य ॥ १०० दं वलिः गंधः प्रथः धूपः दिपः न
 वदः पंचामरः बाजगद दाम्परुः १०० दं सपतिनयः शिधुनिः
 गजदुः खादुः पिअुः जहं वरुं सहिग कानाः गगि रुरः
 पाष्टिकूरः नका वलः गुपीरु रुटः वजधन अहा प्रयमिः

पुनपुजा ॥

स्वाहा ॥ धनः प्रग वलि पूजा ॥ ॥ जां वमं शु ॐ अगमिः स्वा
 गर्कि आग कुतु रं रं रुट् रु स्वाहा ॥ धूप निना जना ॥
 ध्यान ॥ ॐ गगद त्रिन स्यां दिगिः पुना धिक्मिः जलम ना जाम हा
 वलः रुट् वरुं महविनः मिम्वः खट् रुजाः जलम द सुधासि
 महिसन गगि हा ॥ ॥ अः यः पूषः स्वान वा या ॐ द

कि ना धिप न य स्वाहा ॥ ~~उं~~ क ह व ह य स्वाहा ॥ ~~उं~~ क मा द ह व
 ना य स्वाहा ॥ ~~उं~~ पा ग ध ना म स्वाहा ॥ ~~उं~~ स र्व मा न पु य न ह य प स
 ना य स्वाहा ॥ पु ना धि प न य स्वाहा ॥ स र्व पु ना धि प न य स्वाहा ॥
 भ र ग नि दा ष क द ना य स्वाहा ॥ ~~॥ पूजा ना स्वाहा ॥~~
 उं क ह व ह म ह का र्ध व र्ज म ग स कि रु नि न र्ज नि पा ग ध

नः स र्व ज र्म ना ज न मा रु न ॥ ~~॥ व सि ॥~~ उं द कि न स र्व
 पु ना धि प नि यः स र्व ह य द ष भ ग नि पि दा ग भ कि र्धः नू द व सि
 ग रु श र व न स्वा हि २ उं आ ह रू ट स्वाहा ॥ ~~॥ ध न पु न पूजा~~
~~आ प ध य आ पा य ॥~~ ~~॥ सो न वा य ॥~~ उं र म न क रू त स्वाहा
 उं भ र ग नि य स्वाहा ॥ उं मा ना म ह क रू त य स्वाहा ॥ उं स र्व पु ना य स्वाहा ॥

पु न पूजा ॥

ॐ वध्वर्गकृत यस्याहा ॥ ॐ अजान दंष्ट्रा यस्याहा ॥ ॐ अग्निद
ग्धयश्चोत्रह नायस्याहा ॥ ॐ सिंहवायुह नायस्याहा पुना यस्या
हा ॥ ॐ अत्र न दस्मिन् कुक्ष्यात्वा हन प्रगविश चायस्याहा ॥
ॐ श्रोत्रवश्च पुनराकग नायस्याहा ॥ ॐ नत्र कषूत एषूत सुजी
निग नायस्याहा ॥ ॐ दिव्यकृति कृत्स्निष्ठापि नरा वाधयस्याहा

ॐ विष्टवंगमनयचः मातृवंस मगायच गुत्रुव गुत्रवंधूयस्या
हा ॥ ॐ आमागर्हच हृन्नाहृनि यस्याहा ॥ पूजाः जात्या
मुक्त ॥ ॐ नवयामि र्थकयानि श्वपुगाद वासूतान नाउनिहृह
व कां गात्रं पतं नमामिह ॥ वलि ॥ ॐ पुनवचनिः का
प्रकायपुनर्यनागायः ऊजमानसः आयुनागायसूत रुसस

927

1885
1886

धनसुखमयपूजा॥

प्राप्तिर्धः सर्वयुगलयनिवा नाथः ॐ देवलिः नृधिनः मस्यमास
दधिऊनः सर्वोपकननसाहनायः अगनि दाषगांतिर्धः ॐ आः हं
ददः स्वाहा॥ ॥ धनसाकूमयपूजा॥ साकूमिक॥ साकूमि
साकूमिक॥ सः धः मगः साकूमिकाः ॐ धर्मः सनादिनं नृयः
॥ अगलायकः सुवाहं गथा॥ ॥ ॐ आः वुः मरुहं ययनः

दवविः पिष्टमानवायचः ॐ कविमचलः मया ददूननाय
नः इष्टिमायाः नुसर्वजयनसा चविमकायः पिष्टनस्यनादन
धनस्यनस्यमहाकनजवायिनविषमनानापुनगिनादव्या
गाः गयासिन्सिम्कयः मिथमंशुदिअनहिगं म्वापिगंन्धा
धनस्यपुननमामिहं॥ ॥ ॐ नृपूजा॥ दकनाः पंचाक

नृपगुरुवलिः नृपगुरुवलिः नृपगुरुवलिः नृपगुरुवलिः

ॐ नमः श्रीचंद्रमहायाव क्षय ॥ अथ मसंयुक्ता मिसर्वमकुस
मचयः अथरुगवानसनात्रययाऊय ॥ नामसधियददमंरुमच
यसाहा ॥ ॐ चंद्रमहायाव क्षय हं रुठ ॥ ॐ अचल हं जी ॥ ॐ
हं रुठ ॥ हं ॥ हा ॥ हं ॥ ॐ को को को चंद्र चंद्रयचठशुच
कश्कहशुचमयशुचरु जयशुचरु वधश्च मयश्चमंरु

पश्माहयश्चसर्वगकुनामखबंधनकृन्श्चसर्वजकिनीनांगरु
हृणीयि ध्वचयाधियजानाशगयश्मयश्माययश्मयश्माययश्
चश्चंद्रचक्रश्चंद्रचक्रचंद्रमहासनसर्वमाहायययि ॥ ॐ चंद्रम
हायावनायहं हं रुठ ॥ ॐ नमः ४ सर्वसाययियकलसार्धार्थ अच
लकनिवः मधिश्चमधिश्चैरिश्चमधिसरश्चमहाधिवानः क्षनश्च

ॐ नमः संवनाय ॥ ॥ संवनाय नमः सुखं वाकाय नमः नमः
चक्रिगाय देवाय चक्रसवन नमः ॥ १ ॥ मधवक नमः सुदुःसि
वगकिस्त्रुपिनिः महाकार्दस्त्रुपाय मधसं वष नमः ॥ २ ॥ ज्ञस्वा
ननाय देवायः सगिकर्मनाय चः रुकिमूकिप्रदागायः ज्ञस्वसंव
सग नमः ॥ ३ ॥ व्याद्यास्याय नमः सुखं गकियूकावे नमः सुगामां

सधगाय चः व्याधुसंवसग नमः ॥ ४ ॥

ॐ नमो वरुणाय ॥ श्री नमो पूजाया यगु ॥
 ध्यान ॥ श्री नमो देवि पद्माय त्रिस्तुतिनाः त्रिस्तुति
 त्रिस्तुति पद्माः सिद्धि नयन हस्तं चः कौन्ति सो रूपा
 स्तिनाः शुद्ध संपूर्णिकं सतिताः अजयः दय हस्त
 वः धन धाने व सपदा ॥ जायः धूपः आपाः पू
 न्या स ॥ ॐ रग वैशी म व ३ श्री नमो देवि रदा

न काय पाद्या च सर्वपाति रुखा हा ॥ स्वां वी य ॥
 ॐ श्री य स्वाहा ॥ ॐ नमि य स्वाहा ॥ ३ पूजाः ॥ १ स्वाः
 उग्रा ॥ ॐ श्री नमि महा देवि सर्वसंप्रति नायकं
 सर्वकाया प्रणा देविः ॥ १ ॥ नमि नमस्तु ॥ १ ॥
 थनः ॥ १ ॥ पूजा ॥ ध्यान ॥ ॐ वैश्वदेव महा ना ॥

५३२

ङऊनाओमहाधिकाः ङऊकाठिपनिवास्तुः ङऊ
 संघनं संवगाः महाविस्माओति संयिन्नहनपायचं
 निन्नरुः ङऊरुनिदेविपसिद्धिगा॥ जापः धूपः आ
 पाः ॥ ॐ हगवंगीमन्गी ॥ वरुनागनाजा रुद्यान
 कस्यपाथापगि कस्याहा॥ स्या नवाय ॥ ॐ वरुनाय स्वा
 हा॥ ॐ अरुनाय स्वाहा॥ ॐ वागुकि य स्वाहा॥ ॐ न

रुकाय स्वाहा॥ ॐ कनकाय स्वाहा॥ ॐ पद्मनाग
 नाजाय स्वाहा॥ ॐ महापद्माय स्वाहा॥ ॐ संषया नाय
 स्वाहा॥ ॐ कलिकाय स्वाहा॥ ॐ वर्गप्रेष्यं पुनि क्त्वा हा
 पुः नाः ॥ ॐ नागपाभमकानित्यः ॥ उत्तमओमहा
 वनः निगनरुचवृक्षातागी वरुनाय नमस्तुते॥ २॥
 ॐ ह्यमकं पूजा॥ ध्यान॥ ॐ विद्या रुकाय स्वाहा

ॐ नमो केशवा

समहादिदिः अकात्या मोनिनः नु क मूखा न न गः च
उरुजा त्या विन्दु पा गु वः अवन रजा त्याः खि र्द ट
क धान निरु व ग व ह्म हा वि न नु क मू वा गि म गः
म न रजा त्यां म स क वा ह ना व उ रजा त्यां विन्दु पा गु
च अ य त रजा त्यां प न स मानी का ॥ जा पः धूपः आः पा
पूः मा स ॥ उं र ग वं गी म ग् र वि द्वा न का य वा अ पु गि

रु स्या हा ॥ स्वां वा य ॥ उं वि द्वा न का य स्या हा ॥ ३ उं गं
ग न पु गि य स्या हा ॥ उं ग ना धि पु गि य स्या हा ॥ उं ग न
स्वा य स्या हा ॥ उं ग न पु गि य जि गाय स्या हा ॥ उं वि द्वां
रु का य स्या हा ॥ पूजाः नाः उ ॥ उं न म म् वि द्वा न
का य हे न वं रि व न नू डः रु स्र व वृ म हा नो ड का र्द
दि वि वि सा ना रुः उं र्द क स म् रु ज स प्पा ह न ना नं

रुगंः वार्ध्वचर्मनिव्यसनंः खर्गद्वगकधननं॥ सुवा
 दनं स्वद्वपायविद्युनाजोविनायकमहादनं महाय
 नुकदगगजाननंः स्वगवर्ध्ममदिपिः कांयसिद्धि
 विनायकस्वरागुनूपसंपत्तिना विद्यलिनमसुग
 गिवसक्तिपूजा॥ ध्या न॥ उं गगा कौ का न विज निष्
 नः हसा हना महा वपुति भगुति मूषध्वेवः गदा

मरुगमाधुगं॥ अर्धचन्द्रधनंदविः कपात्रकगस
 षत्रं जितविवर्जगागलं सर्वावर्ध्मरूपी नंः गिगानवि
 उविनासंः गगनादिनसागनं वरुजहसिगं वक्र
 वार्ध्वचर्मनिव्यसनंः दकिमकं वनदह्ये चारु
 मागधनां गीतयसनगं वः वामपद्मरूपिगंः दधि
 यनने राहलं वनिवसक्तिविनाय॥ अः पाः पू

ॐ हग वंगी मन्त्रा २ गिवगा किंद विरुदा न काय पा
 द्यां चर्म ना चैतानि कस्या हा ॥ स्वा वा या ॥ ॐ ह ना ह
 नाय नमस्वा हा ॥ ॐ त्रिव काय नमस्वा हा ॥ ॐ सा के वि
 राय स्वा हा ॥ ॐ ना ना द वि य नमस्वा हा ॥ पूः जाः ना
 तु ॥ ॐ नम ग्रा हा हा नाय गुरु ६ कं सं का सं कि
 नेतुः ध्यान रूपि नः सर्व न हा हा स मा प त्त न नाथ

प्रचवति

प्रनमा मिहं ॥ ॐ ॥ प्रचवतिलिख्यते ॥ क्रापां स्थाप
 न ॥ आयुर्वृद्धि ग १४११ मा हां काल सि क भा र्नी र्वो धर्षि
 भय पंच लिम ध्य गो गा व न चन्द्रिका ऊव स ग १४११ र्वव
 स मा हां काल ऊव न व्याधि नी लिव न ऊं वृ कि नी भुव मा
 गिका पि नैव ना चाउ के ॥ मू यार्थ पूजा ह स क ल्य गु नू म धु
 ले गि स मा धि धर्म पूजा ॥ धन वति पूजा ॥ म ध्य स ज्ञाप भूय ॥

कनये ॥ विन्दुं मद्र कासि धृगं पञ्चा नृणी निरुं उग्र
चङ्गागकुं देवी ध्यान पूष्य नमो भूते ॥ मद्रयान ॥ ॐ
शीं हं हम हाम नृविघ्ननासाय हं रुद्र स्वाहा ॥ धूप ॥ ॐ
सयागि शी सिद्धि लो क भू वंग जं २ शी घं हं रुद्र स्वाहा ॥
स्वराव धुञ्जा ॥ स्वी वाय ॥ ॐ रुद्र चन्द्रिकाय स्वाहा ॥ ॐ
उग्र चक्षु स्वाहा ॥ ॐ चन्द्रिकाय नम स्वाहा ॥ ॐ दिव्य नृपि

नमो स्वाहा ॥ ॐ सिद्धि यागि धीनमस्वाहा ॥ पूजात्मास्या
 वाग ॥ माजूर्ध्ववर्धसंकाशांस्वर्धुं टाडविन्दुं कामव
 पीमहाद उग्रचक्षुःपतेनमः ॥ वलि ॥ ॐ श्री नीलजीम
 गसंकाशाधोजद्वयरायावरु उर्ध्वकंठाविजृम्भाकरुगपान
 ब्रह्मद्वयः ॥ ॐ हिवलिपतिगृह २ पच २ खखखाहि २
 महाविद्यार्थेनवचूर्ध्वनवलिपतिगृह २ श्रीं हं रुट् स्वाहा ॥

मध्यसूक्तम् ॥ ॐ नमो श्री योगेश्वराय ३ ॥ योगेश्वरं स
दावी न चक्र मध्यसूक्तं नानाज्ञानसमस्तं चक्रनाथ
यत नमः ॥ ध्यान ॥ ॐ स्वरावधुक् सर्वधर्मास्वरावधु
क् ॥ सर्वत्र कदा संपूर्ण सत्त्वा रथकपञ्च शतं गिरिमूर्खं
द्रुतं चैव घनाघनसमद्युति ॥ गिरिगुरुं हसितं क्रांतं हृत्
लज्जं हस्तं यतं ॥ सत्त्वपथं कवस्मिन् कपालमकट्छला

गिरिगुरुं हस्तं देहप्रज्ञां समस्तं गिरिगुरुं वक्रपथा ध्वजं वाद्य
ध्वजं लज्जं न कर्मक ॥ विद्याधं रावयगुनाथं वृद्धयोग
ेश्वरं सदा ॥ स्वरावधुक् ॥ ॐ हूँ हः योगेश्वराय स्वाहा
ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः
ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः
ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः
ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः

थस्वाहा ॥ ॐ कूं व्याधि शीथस्वाहा ॥ यूं कूं वृद्धि शीथस्वा
 हा ॥ ॐ कूं उलूकि शीथस्वाहा ॥ पूजा न्वास्वास्तुभि ॥ ॐ न
 मशीथागमन्वनाय ॥ सर्वहवात्मकं नाथं थागि शीजाननाय
 कं थागामन्वजगन्नाथगुप्य दचगसदा ॥ हानगकि शी
 महादेवी सहजानन्दे कनूपि शी प्रह्लादनास्व नृपात्मा वंद
 हं भाकदाय शी ॥ गत्यन ॥ अष्टमागिकास्व नृपे द्वना पूजा ॥

दक्षिण

उचसगराष्टा पूजा केन ॥ ॐ लं वादचस्व नृपाय विष्णुजाडा
 विनायक ॥ अक्षरगुक्तं धार्य ध्यानपूर्ण नमास्तु नै ॥ मन्त्र ॥
 ॐ कूं शी कूं ह सर्वविघ्नविनाशाय कूं रुद्रस्वाहा ॥ धूप ॥ ॐ
 कूं गश्वाश्च वसिष्ठलोकं अवगच्छती प्रै कूं रुद्रस्वाहा ॥ ध्यान
 स्वगतवर्धं महादिपि नृकमखागिनिगा ॥ मूसकवाहनाचगुगुजा
 विंदपागुंच अपजनुजाराया पचसु जयमालिको धज ॥ ॥

[illegible]

ॐ विष्णुनाथाय नमः स्वाहा । पूजा लास्या मुनि । नमो दत्त
स्वप्नप्राय विष्णुनाथाय विनायकः गङ्गापतिः हर्षवर्गधामिनि
नमोस्तुते ॥ बलि ॥ ॐ अमृतं कुरुति स्वस्ववाहि २ गिरि २ व
न्धय २ दह २ पच २ गर्जय २ विस्फोटय २ सर्वविघ्नविनाशक
नां महागङ्गाप्रमोदविनाशकनाथाय नमः स्वाहा ॥ स्वस्वस्व
कालकेशने ॥ कुरु यद्दुःखं स वा नरुं कुरु सोमं नरुं कुरु कुरु कुरु

[illegible]

ह व्याघ्रिया घुनूपे ॥ ध्यान ॥ ॐ इन्द्रा कलात्मवदना चतुर्न
जकुचकुला चनी उक्कल्लरूपधा उमचरुवद्वांगपागुधा जधा ॥
आ. पा. पू. ॥ ॐ व्याघ्रिनी ॥ व्याघ्रनूपाय ॥ कलालीय ॥ पी
गवधाय ॥ चू. ला. तु. ॥ व्याघ्रिपीगहजीगवधाय चकवर्ग
जतिनीगा ॥ उमचरुवद्वांगपागु कलधुगं व्याघ्रिदेवी नमस्तु
न पादपूरुम ॥ वलि ॥ ॐ व्याघ्रिदेवी ॥ देवलिगुद्ररुवरखा

हि २ द्रुं रुद्राहा ॥ पश्चिमसुकुम ॥ ॐ जं वाकिणी नकुहनिग
वधाय ध्यानप्रधानमस्तु ॥ मय ॥ ॐ द्रुं वा द्रुं हजं वूकी धीदेवी
धूय ॥ ॐ जं वूकि धीसुजलाव ॥ ध्यान ॥ ॐ वाकिणी हनिग
जकुवधाय जधुगं धीपाधना ॥ ॐ देवी गीगा देवी इवग
वधाय गीगमयनि ॥ आ. पा. पू. ॥ ॐ यं ॐ वूकि धीय
गीगाय ॥ धूपाय ॥ खाननिरुगाय ॥ ॐ गुं ॐ गुं वूलधनाय ॥

पू. ला. गु. नि ॥ ऊं वृ. कि. धी. ह. जि. ग. ज. क. व. र्ध. ज. क. व. र्ग. ल. गि.
 ने. गा. उ. म. ज. र. व. द्वा. ग. ह. र्क. च. जं. वा. कि. धी. द्वा. न. म. स्फ. भ. या. द. यू.
 र्ग. म. ॥ व. लि. ॥ ऊं ऊं वृ. कि. धी. वा. यू. वै. ग. य. स. म. ड. वा. य. ॐ. दं. व.
 लि. ग. ड. र. स. त्वा. नां. मा. ल. वि. धी. स. नी. धा. ति. क. र. स्व. मि. स्वा. हा. ॥ ॥
 व. लि. म. धा. ल. म. धु. ल. धि. त्वा. ॥ पं. चा. प. चा. न. पू. जा. ॥ सि. क्त.
 ज. जं. का. स्वा. क्ता. य. नि. सा. रु. ल. स. म. य. धा. ला. म. न. तां. य.

क्षा. न्ना. ॥ य. ध. र्मा. ॥ दि. ग. व. लि. वि. य. ॥ च. पि. पू. जा. ॥ वा.
 हा. पू. जा. ॥ स्वा. ह. गा. थ. ॥ चा. क. पू. जा. ॥ व. लि. ॥ कि. र्ग. म. ने. ॥
 ग. र. पू. जा. ॥ द. कि. ध. ॥ सि. क्त. न. न. ॥ ॥ व. लि. क्ता. य. ॥